ARISHTAK GUNA VUNAN

- Mohd Abdulla

391

Acc No. 179.

❀ ओ३म् ❀

अरिष्टक (रीठा) गुण-विधान

616

लेखकः—

हकीम मौलवी महोम्मद अब्दुला साहिब

सम्पादक—

डा० गणपतिसिंह वर्मा जर्नलिस्ट

सम्पादक—"रसायन"

चतुर्थावृति १५००] [मूल्य ॥)

प्रकाशक—
रसायन कार्यालय,
पो० बो० नं० १२५ देहली।

LZ3 arishtak
N?
391

सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक:—
नन्दलाल वर्मा
स्वस्तिक प्रिंटिंग प्रेस,
बाजार मसजिद तेहवरखां, देहली।

ACC NO 179.

भूमिका।

खेद की बात है, कि हमारा भारत देश विलायती दवाओं पर मुग्ध होता जा रहा है और देश के स्वास्थ तथा धन की क्षति हो रही है। इसका मूल कारण यही है कि हमारे भाइयों को यह ज्ञान नहीं कि हमारे देश में सस्ते से सस्ती और अधिकता से मिलने वाली साधारण वस्तुओं में क्या क्या चमत्कारी गुण भरे पडे हैं और उनसे किस प्रकार धन तथा यश प्राप्त किया जा सकता है।

हमने इस छोटी सी पुस्तक में भारत के प्राय सभी नगरों में मिलने वाले अरिष्टक (रीठा) के गुणों का वर्णन किया है और अपने अनुभव सिद्ध प्रयोग प्रकट किये हैं हमें आशा नहीं एवम् पूर्ण विश्वास है कि देशके वैद्यों और हकीमों को इस पुस्तक के पढने से बहुत लाभ पहुँचेगा।

चिकित्सा सम्बन्धी गुणों के अतिरिक्त अरिष्टक (रीठा) में जो रसायनिक गुण हैं वे भी लिख दियेगये हैं जिनसे रसायन प्रिय सज्जनों को बहुत सहायता प्राप्त होगी। उक्त पुस्तक में एक अत्यन्त बढिया साबुन केवल रीठा द्वारा बनाने का लाभदायक एवम् सच्चा प्रयोग लिखा है जिसके अनुसार साबुन बनाकर बेकार भाई सरलता पूर्वक धन और यश प्राप्त कर सकते हैं।

पुस्तक की अधिक प्रशंसा करना अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना है। इस पुस्तक की उपयोगिता का यही सबसे बडा प्रमाण

है कि हमें शीघ्र ही इसका चतुर्थ संस्करण प्रकाशित करना पड़ा है, इसलिये हम अधिक लिखना अनुचित समझते हैं। जब आप पुस्तक को पढ़ेंगे तब स्वयं ही जान सकेंगे कि इस पुस्तक में क्या है।

अन्त में हम पाठकों से निवेदन करते हैं कि मनुष्य से त्रुटियां रहना सम्भव है अतः सुविज्ञ पाठक जहां कोई त्रुटि देखें, उससे हमें अवश्य सूचित करदें ताकि आगामी संस्करणमें सुधार कर दिया जाय।

विनीतः—

लेखक—

अरिष्टक गुण-विधान

रीठे के गुण तथा नाम

रीठे को प्रत्येक मनुष्य जानता है, जो सर्वत्र मिल सकता है, और बहुत ही सस्ता है। सभी लोग साधारणतया कपड़ा धोने तथा सिर धोने के काम में लाते हैं। पाश्चात्य डाक्टरों का कथन है कि इसमें साबुन से पचास गुणा अधिक मैल दूर करने की शक्ति है।

निघन्टु में रीठे के गुण

रीठा वात, पित, कफ (त्रिदोष) नाशक है। गुर्दा विनाशक, गर्भपातक, आगन्तुक रोग निवारक लेखन अर्थात् कमजोर करने वाला है। इसका पानी पीने से वमन द्वारा विष दूर हो जाता है। इसके पानी का नस्य लेने से सिर की व्याधियां दूर हो जाती हैं।

दी इन्डियन मेट्रिया मेडिका में रीठे के गुण

रीठा कफ वर्द्धक, वमनकारक, रेचक, कृमिनाशक, श्वांस रोग तथा उदर रोगके लिये सकमूनियां (एक कडवी सफेद घास का जमा हुआ दूध) के साथ उचित मात्रा में मिश्रित करके विरेचन दिया जाता है। हिस्टेरिया (बाव गोला) गुल्मरोग,

अपस्मार नाना प्रकार की मूर्छामें नस्य देने से चैतन्यता शीघ्र आ जाती है। विषैले जन्तुओं के काटने पर लगाना भी अति उपयोगी है।

मुफताउल खजायन लिखता है

रीठा—आमाशय जिगर तथा पट्ठों को शक्ति देने वाला पाचक, वाजीकरण, रेचक, पक्षाघात, अपस्मार, विशूचिका, पांडु रोग, कौलंज, दूषित वायु, योनी पीडा, ज्वर चौथिया, श्वित्र-कुष्टदि रोगों को लाभदायक है।

मखजनुल अद्विया की सम्मति

रीठा—आमाशय को बल देने वाला, जठराग्नि को प्रदीप्त करनेवाला तथा जोडों को बलवान करने वाला है। इसकी धूनी डब्बा, उन्माद रोग को उपयोगी है। सर्पादि जन्तुओं के दंशन का अगद है। दूध में उबाल कर पिलाने से भी योनि को संकीर्ण करता है।

सफेद दागों को अर्थात् श्वेतकुष्ट पर लेप करना लाभदायक है। रीठा, उष्ण तथा दूसरे दर्जे में शुष्क है मात्रा तीन माशे तक देना उचित है। वमनकारक है, उदरमें विकार उत्पन्न करता है, इसके अभाव में खरबूजे की जडका सेवन उचित है। हृदय, प्लीहा, जलन्धर आदि रोगों के लिये उपयोगी है। दूषित वायु को दूर करता और रेचक है। इसको बादाम रोगन या सिकंजबीन के साथ देना चाहिये।

रीठे के नाम तथा गुण

संस्कृत में—अरिष्टक हिन्दी में—रीठा
बंगला में—रिठे गाछ मराठी में—रीठा
अंग्रेजी सोपनट (Soapnut) लेटिन में सेपिंटस इमार्जीनटन्स Sapintuas Emarginatus सेपिडस ट्रिफोलियेटस Sapindus Trifoliatus

विवरण—वन तथा बागों में बहुत होते हैं। रीठा त्रिदोष नाशक, गर्भपातक, रज प्रवर्तक अर्थात मासिक धर्म को जारी करने वाला है।

सिर की व्याधियां

शिर पीड़ा

वैद्यक मतानुसार सिर दर्द ११ प्रकार के होते हैं। यूनानी वैद्यों के निकट तो सिर दर्दकी बहुत सी किस्में हैं। जिनका याद करना भी उन्हीं पूर्वजों का ही काम था आजकल तो हमारे नफीस मिजाज के हकीम इनको एक बार पढना भी सिर दर्द समझते हैं। रीठा सिर के रोगों में अत्युपयोगी है। निम्न प्रयोग प्रायः सिर दर्द को लाभ देता है।

सिर दर्द नाशक नस्य

(१) प्रयोग—रीठे का छिलका १ तोला, कश्मीरी पट्ठा १ तोला, सूक्ष्म पीसकर शीशी में सम्भाल कर रखें, आवश्यकता होने पर नस्य दें। नाक से पानी निकल कर पीड़ा शान्त हो जायगी।

(२) दूसरा प्रयोग—रीठे का छिलका, थंतर के बीज, कश्मीरी पट्टा समभाग लेकर और अल्प मात्रा केशर में मिलाकर नस्य तैयार करें। यह नस्य प्रतिशायय नजलाको दूर करता है।

अर्धाव भेदक चिकित्सा

यह पीडा सिर के अर्द्ध भाग में होती है, इसकी एक किस्म बहुत ही भयंकर है जिसको अनन्तवात कहते हैं। इसका उल्लेख फिर किया जायगा अर्धाव भेदक के लिये रीठा अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है। दो प्रयोग नीचे लिखे जाते हैं।

प्रथम प्रयोग—रीठे के छिलके को पानी में मसलकर झाग निकालें और शीशी में सुरक्षित रखें, यदि पीडा बाई ओर हो तो दाहिने ओर यदि सीधी ओर हो तो बाईं ओर दो बूंद नाक टपकायें।

दूसरा प्रयोग—नम्बर १-२ में जो नस्य औषध लिखी है वही सेवन करना चाहिए।

भ्रुत पीड़ा

यह रोग अर्धाव भेदक से मिलता जुलता है इनमें केवल अन्तर यह है कि भ्रुत पीड़ा सूर्योदय से आरम्भ होती है और ज्यों २ सूर्य ढलता है त्यों २ दर्द भी अधिक होता जाता है और दिन चढने के पश्चात् आराम हो जाता है किन्तु अर्धावभेदक की पीड़ा में ऐसा नहीं होता। उपर्युक्त पीड़ा में निम्नलिखित टोटका भी उपयुक्त है। सिर दर्द अर्थात् मस्तिष्क (मस्तक) पीड़ा होने से पूर्व दो बूंद दर्द के दूसरी ओर के नासिका छेद में टप-

कायें। एक २ घन्टे के पश्चात् तीन बार टपकाना चाहिये। यदि ईश्वर ने चाहा तो उसी दिन आराम हो जायगा और तीन दिन में तो दर्द का नाम भी न रहेगा।

अनन्त वात

चिन्ह-इस पीड़ामें नेत्रके डेलेमें टीस (चीस) हुआ करती हैं। इससे प्रायः आंख ही फूट जाया करती है और आंखोंमें लालिमा फोला इत्यादि हो जाना इस रोग का साधारण काम है।

इसके तीन शतसौ अनुभूत प्रयोग "अनुभूत योग चिन्तामणि" में लिख दिये गये हैं जिनमें एक प्रयोग लेप का है। वस्तुतःइस लेप से शीघ्र ही पीड़ा शान्त होजाती है और दो प्रयोग और भी अत्यन्त प्रभावशाली हैं, वह इस पुस्तक में देखलें। एक रीठे का प्रयोग जो एक सन्यासी से प्राप्त हुआ था-निम्नलिखित हैं। बना कर लाभ उठायें।

(१) रीठे का छिलका एक तोला, फल बड़ी छमक निमौली एक तोला सूक्ष्म पीस कर नस्य दें, ईश्वर की कृपा से रोग निवृत्ती होगी।

(२) पोस्त (छिलका) रीठा स्त्री के दुग्ध में घिसकर नस्य दें।

(३) तीसरा प्रयोग केवल अकेला रीठे का छिलका ही सूक्ष्म पीसकर नस्य बनाकर सुघें। टीस (चीस) को बन्द करता है!

पथ्य—सूखी चीजों तथा तेल की बनी हुई वस्तुएं खटाई

आदि न खानी चाहियें। यदि उस दिन उपवास रखा जाय तो अत्युत्तम है।

भोजन—दूध, जलेबी, खिचडी आदि खावें।

नजला तथा जुकाम।

वैद्यों का कथन है कि नजला प्रतिश्याय समस्त रोगों की जड है। इसकी चिकित्सा में विलंब न करना चाहिये। जिनको सदा ही नजले की शिकायत रहती है वह प्रायः ही नाना रोगोंमें ग्रस्त रहते हैं। लेखक ने एक नुसखा नजला तथा जुकाम (प्रतिश्याय) का अपनी पुस्तक "फिटकडी गुण विधान" में लिखा है, जिसके ३-४ दिन सेवन करने मात्र से पुराना नजला समूल नष्ट हो जाता है। इस प्रयोग के विषय में हमारे कार्यालय में अनेक प्रशंसापत्र विद्यमान हैं। निम्न औषधि भी जुकामके लिये उत्तम है। दिमाग का रुका हुआ कफ छींक आकर दूर हो जाता है

प्रतिश्याय नस्य।

नीमके बीज की गिरी, कश्मीरी पट्टा, रीठे का बीज, सफेद कनेर के फूल सूक्ष्म पीसकर कपड छान करके सेवन करें यह अत्युत्तम नस्य है।

रीठे का तैल

यह तेल पुराने प्रतिश्याय के लिए अत्युत्तम है। रीठे का छिलका २ तोला, छमक निमौली २ तोला को आध सेर पानी में रात्रि को भिगोदें और प्रातःकाल उबालें, जब आध पाव पानी शेष रहे तो आध पाव सरसों का तेल मिलाकर जोशदें। जब

केवल तेल मात्र शेष रह जावे और पानी लेशमात्र भी न रहे तो उतार कर छान लें और काम में लावें। दो तीन बूंद सूघें।

अन्य प्रतिश्याय नस्य।

लौंग, रीठे का छिलका, तम्बाकू समभाग लेकर सूक्ष्म पीसलें और नस्य की भांति सुंघावें।

एक उपयोगी नस्य।

पक्षाघात, अर्दित रोग, श्रुत पीडा और अर्धाव-भेदक के लिये सर्वोत्तम है और यदि किसी की घ्राण शक्ति जाती रही हो और किसी प्रकार सुगन्ध दुर्गन्ध न आती हो तो उसको भी अच्छी कर देता है। तथा जिसको हर समय नींद सी आती हो तो उसको भी लाभप्रद है। रीठे का छिलका, काली मिर्च सम भाग लेकर सूक्ष्म पीसकर नस्य बनालो और थोडी सी सुंघाया करो।

नेत्र रोग चिकित्सा।

शारङ्गधर के अनुसार नेत्रोंके घेरेमें ९४ व्याधियां हैं और कई बुद्धिमानों की सम्मति में ७८ विशेष रोग हैं लेकिन जिन रोगों में रीठा उपयोग होता है उनका उल्लेख करता हूं।

रतौंधा।

रतौंधाके रोगी को रात्रिके समय दिखाई नहीं देता दिनमें खूब दिखाई देता है।

चिकित्सा—रीठे के छिलके को जलमें भिगोकर रखें और प्रातःकाल उबालकर खूब छान के किसी शीशी में सुरक्षित रखें

और सोते समय एक एक सलाई डालें।

फोला या जाला

निम्न लिखित औषध से फोला कट जाता है। रीठे का छिलका ४ तोला, नींम्बू का रस सेर भर दोनों को नीम के एक ऐसे डन्डे से जिसके नीचे मंसूरी पैसा लगा हुआ हो-कांसी के कटोरे में रगडे और छिलके में थोडा २ रस डालकर समस्त जल को सुखादें। जब गोलियां बनाने के योग्य हो जावे तो लम्बी २ गोलियां बनाकर छाया में सुखालें और संभाल कर रक्खें। आवश्यक्ता पर पानी में घिसकर नेत्रों में प्रातः सायं डाला करें। यह बनी बनाई गोलियां हमारे यहां से भी स्वल्प मूल्य में मिल सकतीं हैं।

रीठे का सुरमा।

रीठे के छिलके को सूक्ष्म पीसकर कपड छान करें और समभाग काला सुर्मा मिलाकर खरल में खूब रगड कर सुरक्षित रखें।

लाभ—फोला, रतोंधा, नेत्रों की लाली व दृष्टि को अति लाभ देने वाला है-रात को सलाई से डालें।

बच्चों की आंखों का नीलापन।

जिस बच्चे की आंखें नीली हों उनको काली बनाने के लिए रीठे के छिलके को जलाकर जैतून के तेल में मिलाकर बच्चे की खोपड़ी पर लगाया करें। दोनों नेत्र काले हो जावेंगे।

नेत्र रसायन सुरमा।

हमारा बनाया हुआ नयन हितकारी सुर्मा आंखोंके समस्त रोगों को शान्त करता है, धुन्ध, जाला, आंखों से कम दिखलाई देना, नेत्रों से जल झडना, मोतिया-बिन्द, रोहे आदि को गिनती के दिनों में दूर कर देता है। यदि प्रथम दिन लाभ दिखलाई न दे तो दाम वापिस मंगालें। वास्तव में यह सुर्मा नेत्र ज्योति को बढाने में अक्सीर है। मूल्य एक शीशी १॥।) बडी का दाम ३॥)

मिलने का पता—रसायन फार्मेसी पो० बो० १२५ देहली।

दन्त रोग चिकित्सा।

दन्त पीड़ा व दर्द दाढ की अनुभूत औषधि।

नीचे लिखा नुसखा दर्द दांत तथा दाढ़ के लिये अति उपयोगी सिद्ध हुवा है। कतिपय लोगों के समस्त दान्तों में पीडा रहा करती है। और सर्द पानी पीने से तो जान ही निकल जाती है। अतः इससे तुरन्त ही आराम हो जाता है। यह प्रयोग हमको अपने मित्र जनाब मौलवी इलाहीबख्श साहिब सरदूल गढी से प्राप्त हुआ है।

प्रयोग-रीठेके बीज को जलाकर कोयला बनालें, और इसी के समभाग भुनी फिटकरी मिलाकर सूक्ष्म पीसकर दन्त मंजन बनालें। हिलते हुये दांतों तथा दाँतों से रक्त जाने और दांत वा दाढ की पीडा को दूर करने के लिये अति प्रसिद्ध है।

द्वितीय प्रयोग-यह रीठे का तेल है जो कि दन्त पीडा और दाढ के दर्द को शीघ्र ही दूर करता है। यथा रीठा लेकर उसका

पातालयन्त्र द्वारा तेल निकालें और रूई से दांतों पर लगायें। यन्त्र की क्रिया साधारण है।

कण्ठ रोग

हलक मनुष्य के शरीर में द्वार स्थान का प्रतिनिधि है इसके लिए रीठा परमोषधि है।

खुन्नाक यह अत्यन्त भयानक रोग है, इससे रोगी की सहसा मृत्यु हो जाने का पूर्ण भय है।

चिन्ह--कंठ स्थान में कुछ अटका हुआ सा प्रतीत होता है और अंत में कंठ के बिलकुल बन्द हो जाने की सम्भावना है इसकी दवा निम्न लिखित है।

खुन्नाक की तत्कालीन प्रभावशाली औषधि।

यह दवा तुरन्त फायदा देती है, इससे मूर्छित रोगी तत्क्षण सचेत होकर उठ बैठता है और जिनके हलकमें एक घूंट पानी भी न जाता हो, वह भी ईश्वर की कृपा से दूध तथा नरम भोजन खा सकता है। खुन्नाक चाहे किसी प्रकार का हो अथवा अन्तिम सीमा को पहुँच गया हो, पोस्त (छिलका रीठा १ तोला को घोंटकर उबाल कर कुल्ली करावें। यदि रोगी पडा हो तो पानी में मुख डालकर दूसरा व्यक्ति उसके सिर को हिलावे। ईश्वर ने चाहा तो दो ही मिनिट में रोग ग्रस्त मनुष्य चंगा होकर उठ बैठेगा।

पथ्य—खट्टे पदार्थ और गरिष्ट भोजन व लस्सी अचार से बचें। साबूदाना तथा खिचडी हितकर है।

कंठ माला।

यह बडी कठिनता से जाने वाला रोग है, निम्न प्रयोगसे बहुत से मनुष्यों को लाभ पहुंचा है। रीठे का छिलका सिरके में सूक्ष्म पीसकर कंठमाला पर लेप करें। और इसी प्रकार प्रातः सायं बहुत दिन तक लेप करते रहें। ईश्वर ने चाहा तो गिनती के दिनोंमें कंठ माला को आराम हो जायगा। अद्भुत सरल उपाय है। यह दवा ऐसे रोगियोंके लिए लाभदायक सिद्ध हुई है जिनके अभी पीप न पडी हो।

पथ्य--खट्टी चीजों गुड व शक्कर इत्यादिसे परहेज रखें।

भोजन—मूंग की दाल, गेहूं की रोटी इत्यादि।

फेफड़े तथा छाती के रोग

रीठा—ऊपर के रोगों में हितकर है, इसके द्वारा वमन कराने से कफ निकल कर छाती हल्की हो जाती है।

कास और श्वांस रोग

दमा और खांसी के लिए वैद्य लोग "रेवन्द असारा" व हीरा कसीस से वमन कराते हैं जिससे कुछ समय तक दौरा रुक जाता है लेकिन रीठे का छिलका वमन के लिए अधिक हित कर है।

प्रयोग--४ से ८ माशे तक रीठे का छिलका पानीमें काढ़ा करके पिलाया जावे तो ईश्वर की कृपा से अल्पकाल में ही वमन होगी फिर गर्म जल खूब पिलावें जिससे पुनः वमन हो जावे। आशा है कि एक बार तो छाती कफ से निवृत यथा शून्य हो

जायगी और अधिक काल तक कास तथा श्वास रोग से छुटकारा हो जायगा। कफज खांसी तो जाती ही रहेगी। वमन करना ग्रीष्म ऋतुमें उचित है बिना वैद्य की सम्मतिके वमन नहीं करानी चाहिये।

बलगम निकालने वाली गोलियों का सेवन कर सकते हैं जिनसे धीरे २ कफ निकलता रहता है। और थोडे ही दिनों में रोगी स्वस्थ चित्त हो जाता है।

श्वांसाहारी चूर्ण

रीठे के बीज का चूर्ण बनावें। इसको नौ माशा नित्य प्रति प्रातः सायं सौंफ के अर्क या अर्क गाजवाँ से दें, ईश्वर ने चाहा तो १५ दिन में आराम हो जायगा।

कफ हरण वटिका

रीठे का छिलका सूक्ष्म पीसकर शहद (मधु) से गूंद कर चने समान गोलियां बनावे। दो वटिका से ४ तक गाजवां के अर्क या ताजे पानी के साथ देवें। जब दवा सेवन करें तो खूब पका हुवा घृत खाना हितकर है।

आमवात (पसली का दर्द)

इस रोग में प्रायः कोष्टबद्धता हुआ करती है और इसी कारण से रोगों में पीडा की अधिकता हो जाया करती है। कितने ही लोगों का दर्द चिरकाल तक नहीं जाता है। निम्न औषधि पुराने रोग को हितकर है। रीठे का छिलका सूक्ष्म पीसकर कपड छान करके मधु में मिला दें, और इसमें से एक माशा रात के

समय दूध के साथ सेवन करें। एक प्रयोग प्लीहा की चिकित्सा में लिखा जावेगा वह पुराने व नवीन दोनों प्रकार के रोगों के लिये हितकर है और एक नुसखा अरीठा अर्थात् रीठे की गोलियां आमाशय के रोगों के वर्णन में लिखी हुई हैं वहां देखलें। यह भी हर प्रकार के नवीन तथा पुराने दर्द में लाभदायक सिद्ध हुई हैं मैंने निमोनियां के लिये टकोर का एक परीक्षित योग अपनी प्रसिद्ध "फिटकडी गुण विधान" नामक पुस्तक में लिखा है। जो पसली दर्दमें सर्वोत्तम सिद्ध हुवा है। चाहे रोगी व्याधिसे कितना ही व्याकुल हो और मरणासन ही क्यों न हो-इसके टकोर करते करते ही आराम हो जाता है। इस रोग में ठंडी और गरिष्ट वस्तुओं से परहेज करें। अण्डे की उबली हुई जर्दी शहद में मिलाकर या मूंग की दाल का पानी, साबूदाना इत्यादि खाने को दें।

यकृत और प्लीहा रोग

यकृत मनुष्य के शरीर का मुख्य अंग है। इससे दोषों की उत्पत्ति होती है। प्लीहा नवीन और बात दोषों का स्थान है। रीठा आरम्भिक जलन्धर रोगमें और प्लीहा शोथमें हितकर है।

पांडु रोग निदान

ऊष्ण वस्तुओं के अधिक सेवन से यकृत में पित्त उद्भव होकर रक्तके वर्ण को पीत बना देता है और यह पीलापन प्रथम नेत्रों में फिर सारे शरीरमें प्रकट होता है। पीलिया (पांडु रोग) में चिकनी चीजोंसे, गर्म खाद्य पदार्थोंसे यथा आलू, अर्बी आदि

के सेवन से बचें।

भोजन—साबुदाना, जौ आदि का प्रयोग प्लीहा की चिकित्सामें लिखा है वहाँ देखलें। प्रयोग का नाम माजून बिंदक है

तिल्ली का बढना

साधारणतया मौसमी बुखार के पश्चात् तिल्ली बढ जाती है और कठिनता से जाती है। निम्न प्रयोग के सेवन से दो तीन दस्त नित्य प्रति आकर प्लीहा न्यून हो जाता है और थोडे ही दिनों में आराम हो जाता है। परीक्षा करें।

माजून बिन्दक

रीठे का छिलका १० तोला, पीत हरीत की बक्कल २० तो० सूक्ष्म पीसकर शहद में मिलालें। जलन्धर व पांडु के लिये लाभदायक है। मात्रा प्रति दिन ३ माशा।

पथ्य—खटाई और तेल की चीजें गुड और शक्कर न खावें।

भोजन—मूली का अचार, बेसनी रोटी ऊंटनी का दुग्ध।

मेरे पास पांडु रोग का एक ऐसा अद्भुत और चमत्कारी प्रयोग है कि यदि इसको अक्सीर पांडु रोग कहें तो अत्युक्ति न होगी। गत वर्ष मैंने एक साथ पचास रोगियों पर इसकी परीक्षा व अनुभव किया था। ईश्वर की कृपा से पचासों रोगियों को ही शीघ्रातिशीघ्र आराम होगया इसलिये यह शत प्रतिशत कभी निष्फल न जाने वाला प्रयोग है। इस प्रयोग को मैंने निःसंकोच भाव से अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "अनुभूत योग चिन्तामणि" में

प्रकाशित कर दिया है। पुस्तक रसायन कार्यालय पो० बो० १२५ देहली से ४।) में मंगाकर देखलें।

आमाशय तथा पक्वाशय रोग

मनुष्य के स्वास्थ का निर्भर अधिकतर आमाशय पर है लाहौरी हकीम ने तो प्रमेह, स्वप्नदोष, हस्तक्रिया कण्ठमाला (गलगड) आदि का कारण भी पाचन शक्ति के कम होने का दोष कथन किया है।

उदर शूल (कौलंज)

पेट के दर्द के लिए निम्न चुटकला अत्यन्त लाभकारी है एवम् कौलंज (पेट के दर्द) को तुरन्त खो देता है। नमोनिया में भी लाभदायक है। इस प्रसिद्ध यूनानी मिश्रण का नाम हबूब बिन्दक अर्थात् रीठे की गोलियां हैं।

हबूब बिन्दक (रीठे की गोलियां)

रीठा ३ तोला, गुड १ तोला मिलाकर खूब कूटें, तत्पश्चात् जंगली बेर के बराबर और दूसरी काली मिर्च के बराबर गोलियां बनालें। सख्त तबीयत वाले को बडी गोली और नर्म तबीयत वाले को छोटी गोली देनी चाहिये रात के समय खाकर सो रहें आमाशय का दोष, हर प्रकार का नमोनिया, विशूचिका, कौलंज में हितकर है, कौलंज वाले को तीन गोली देनी चाहिये। यह को अर्दित भी लाभदायक है।

विशूचिका व अतिसार

रीठे के छिलके को सूक्ष्म पीसकर पानी या अर्क गुलाब

में मिलाकर मूंग के समान गोलियां बनावें। आवश्यक्तानुसार एक या दो गोली गुलाब के अर्क के साथ देते रहें। इससे वमन और दस्त बन्द हो जावेंगे किन्तु यह याद रहे कि जब तक दूषित द्रव्य न निकल जावें तब तक कदापि बन्द करने का यत्न न करें। या वमन लाने वाली औषधि देकर वमन करावें अथवा यही गोलियां अधिक मात्रा में दे दें या रीठे को जोश देकर पिलावें। जब भली प्रकारसे विष निकल जावे तो बन्द कर सकते हैं। जब तक निवृत्ति न होजावे भोजन कदापि न दें, फिर धीरे २ साबूदाना आरंभ करें।

पुराना अतिसार

रीठा साढे चार माशा आध पाव पानी में भिगोकर झाग उठावें और छानकर पिलावें। जीर्ण अतिसार को हितकर है।

गुर्दा और मूत्राशय रोग

मनुष्य के शरीर में गुर्दा कहार का काम करता है जो जिगरसे पानी खैंचकर मूत्राशय रूपी कुण्डमें एकत्रित कर देता है।

यह अति भयानक पीडा है, इसमें मनुष्य बेचैन (व्याकुल) होकर मीनके समान तड़पता है। इसकी पहिचान यह है कि दर्द की टीस (चीस) गुर्दे से उठकर पीठ की ओर निकला करती हैं मूत्र का रुक २ कर आना, मल का न निकलना भी इसका चिन्ह हैं। १ रीठे का छिलका तथा गिरी (जिसका ऊपर का काला छिलका दूर कर दिया हो) सूक्ष्म पीसकर पानी मे पांच गोलियां बनाओ और एक गोली सेवन करो। ईश्वर ने चाहा तो तुरन्त ही

आराम होगा। यदि एक गोली से आराम न हो तो फिर एक गोली दें।

पथ्य—बादी और गरिष्ट वस्तुओं से परहेज करें।

भोजन—मूंग तथा अरहर की दाल मसालेदार और गेहूं का फुल्का, शोरबा आदि।

सुजाक (मूत्रकृच्छ) रोग

साधारणतया व्यभिचार दोषसे सुजाक हो जाता है दूषित शुक्र तथा वेदना सहित मूत्र आता है। इसके लिए एक अनुभवी का कथन है कि पोस्त रोठा १ रत्ती, १ तोला खांड में मिलाकर शर्बत बजूरी या दूध की लस्सी से खिलाना बहुत गुणकारी है। किन्तु दोपहर और प्रातःकाल उपरोक्त मात्रा ३ माशे बताशे के साथ दाना बडी इलायची ३ माशा मिलाकर दूध की लस्सी से पान करें।

परहेज—गर्म, खट्टी वस्तुओं तथा मांस, चाय और मैथुन से बचें।

भोजन—दूध, डबल रोटी, दूध में पकाया हुआ जौ का दलिया, खिचडी इत्यादि।

गुदा रोग

यह दो प्रकार का होता है। एक खूनी (रक्तज) दूसरा बादी, खूनी में खून आता है, बादीमें मस्से फूल जाते हैं। जिससे शौच (पखाना) जाते समय वेदना होती है इसके लिये निम्न योग सेवन किया जावे।

(१) रीठे के छिलके का चूर्ण ५ तोला, रसौंत शुद्ध की हुई १० तोला, गुड १० तोला समस्त औषधियों को कडाही में डालकर थोडा सा पानी डालें और नीचे मन्द २ आंच देते रहें। जब गाढा हो जावे और गोली बन सके तो जंगली बेर के समान गोलियां बनालें, प्रातः समय एक गोली गाय के मक्खन तीन तोले में रखकर खिलावें। ये गोलियां बवासीर के लिए अत्यन्त लाभदायक हैं। यह गोलियां १॥) रु० दजनके हिसाबसे 'रसायन फार्मेसी' से मिल सकतीं हैं। परन्तु ४ दर्जन से कम नहीं भेजी जाती, यह गोलियां बादी की बवासीर के लिये श्रेष्ठ हैं। खूनी के लिये द्वितीय प्रयोग लिखा जाता है।

द्वितीय प्रयोग।

इस प्रयोग से खूनी बादी दोनों प्रकार का अर्श जाता रहता है। पोस्त रीठा, कलमी शोरा, यवक्षार समभाग लेकर रत्ती २ की गोलियां बनालें। मात्रा एक गोली प्रातः एक गोली सायं समय घी के साथ १५ दिन तक दें, अवश्य लाभ हो जायगा।

तृतीय प्रयोग।

चूर्ण बवासीर—यह चूर्ण अति अद्भुत है, इसके सेवन से अर्श की व्याधियां, कण्डू (खारिश) जलन, पीडा, मस्सों का वेग, अजीर्ण, रक्तज, प्रमेह आदि शीघ्र ही दूर हो जाते हैं। कुछ समय में मस्से कुमलाकर अर्श रोग समूल नष्ट हो जाता है। बहुत से व्यक्ति इस प्रयोग को गुप्त रखते हैं, परन्तु मैं तो बिना किसी संकोच के प्रकट किए देता हूं। आशा है कि लाभ उठाकर

मुझे आशीर्वाद देंगे। कत्था सफेद १ तोला, रीठे का छिलका जलाया हुआ १ तोला इन दोनों को एक साथ सूक्ष्म पीसकर शीशी में भर रखें। आवश्यकता पडने पर १ रत्ती से २ रत्ती तक मक्खन या मलाई में लपेट कर निगल लें और इसी प्रकार एक सप्ताह खाते रहें, और ६ मास के पश्चात एक सप्ताह पुनः सेवन कर लिया करें हानिकारक वस्तुओं से बचें। रोग दूर हो जावेगा।

चतुर्थ प्रयोग।

केवल रीठे का छिलका सूक्ष्म पीसकर इसी में तनिक दूध मिलाकर एक २ रत्ती की गोलियां बना लें और प्रतिदिन एक गोली प्रातःकाल ताजे जल से निगल लें।

यदि गर्मी मालूम हो तो दही के पानी से निगलना उचित है।

लेप

रीठेका छिलका सूक्ष्म पीसकर पानीके द्वारा लेपसा बनालें और मस्सों पर दोनों समय लगाते रहें। अल्पकाल में ही मस्से जाते रहेंगे।

पथ्यः—गर्म वस्तुओं यथा मांस, बैंगन, मिर्च, खट्टी वस्तुओं से परहेज करें।

आहारः—चने या गेहूंकी रोटी, घृत, हरीरा, दूध अधिक सेवन करें, नमक न खावें।

त्वचा रोग।

त्वचा रोग जोकि चर्म पर प्रतीत हों। विशेषकर उपदंश

रोग में रीठा बडा ही हितकर है। रस कपूर, दाल चिकना आदि इसके समक्ष नितान्त तुच्छ हैं यद्यपि रस कपूर आदि शीघ्र प्रभाव डालने वाले हैं तथापि विष हैं। किसी को ज्वर हो जाता है, किसी के दांत गिर जाते हैं, मुंह आ जाता है किन्तु निम्न-लिखित प्रयोग से किसी बात का डर नहीं है। न तो ज्वर का भय रहता है। और न मुंह आता है। एक पैसे की लागत से १०-१५ रोगी स्वस्थ हो जाते हैं। यह वह टोटके हैं जिन्हें संयासी लोग अपने हृदयमें ही लेजाते हैं। मैं परोपकार की दृष्टि से उसी प्रयोग को अंकित करता हूं जिससे कि सभी लोग लाभ उठा सकें और मुझे आशीर्वाद दें। यह हमारा अनुभूत प्रयोग है।

उपदंश वटिका।

यह वटिका देखनेमें तो साधारण हैं परन्तु लाभमें अमूल्य नुस्खों से भी बढकर है। ईश्वर को धन्यवाद क्यों न दिया जावे कि जिसने साधारण वस्तुओं में अनेकानेक ऐसे गुण भर रखे हैं कि जिनका हम चिन्हा वर्णन करने में भी असमर्थ हैं। सच है ईश्वर ने कोई भी वस्तु निरार्थक उत्पन्न नहीं की हैं। रीठे के छिलके को धूप में सुखाकर बारीक पीसें ओर कपड छान करके पानी के द्वारा मसूर के दाने के समान गोलियां बनालें। मात्रा १ गोली प्रातः समय निगल लें। तत्पश्चात पाव भर दही पानी में मिलाकर पी लिया करें १५ दिन में आराम हो जावेगा।

परहेज—नमक, मिर्च, गरम चीजें।

आहार—दूध, घी खूब खायें जिससे खुश्की न पैदा हो।

नोट—मैंने इन गोलियों की उपदंश के नये रोगियों पर परीक्षा की है पुराने रोगियों पर नही परन्तु जिन महाशय से यह नुसखा प्राप्त हुआ है उनका कथन है कि यह तीसरे दर्जा में हित कर है, आप परीक्षा करके देखलें, आशा है कि अवश्य हितकर सिद्ध होगो।

नोट—नं० २ यद्यपि इन गोलियोंके सेवनसे घाव इत्यादि स्वयंमेव ही भर जाते हैं, किन्तु मैं इन गोलियों के साथ एक मरहम और लगाता हूं, वह ऐसा आश्चर्यजनक है कि चाहे उपदंश के घावों में कितनी ही जलन और खुजली हो, इसके लगाते ही ३-४ दिन में घाव दूर होकर शरीर शुद्ध हो जाता है। केवल दो पैसे लागत के आते हैं। चूंकि वह मरहम इस किताब से कुछ सम्बन्ध नहीं रखती, इसलिये उसका उल्लेख अनावश्यक है। हां जो साहब पूछना चाहें मैं बताने को उत्सुक हूं। केवल एक शर्त है कि या तो वह हमारी पुस्तकों में से कोई एक पुस्तक मंगालें। जिससे नुसखा भी उसी वी० पो० में लिख दिया जाये, या हमारी प्रसिद्ध पुस्तक "अनुभूत योग चिन्तामणी" रसायन फार्मेसी पो० बो० नं० १२५ देहली) से मंगाकर देखलें, जिसका विज्ञापन दूसरी जगह दिया गया है। यह मरहम वास्तव में आश्चर्यजनक प्रभावशाली है। इसमें केवल दो चीजें हैं, यदि किसी कृपण व्यक्ति के पास यह नुसखा होता तो वह कदापि किसी को न बताता। किन्तु इस रोग से ईश्वर ने मुझे बचाया हुआ है।

द्वितीय प्रयोग

निम्नलिखित प्रयोग उपदंश तथा स्वित्र कुष्ट तक को भी हितकर है। प्रथम विरेचन दें। विशेषतया काला विरेचन अत्युत्तम है, जिसका नुसखा 'करावा दोनों'में विद्यमान है, तत्पश्चात् निम्न प्रयोग सेवन करें। सब्ज तूतिया १ भाग, रीठे का छिलका दो भाग। दोनों को पृथक २ खूब ही सूक्ष्म पीसकर मिलालें और बिना कलई की तांबे की तश्तरी में डालकर आग पर गर्म रखें, जब दवा का रंग बदलते २ कत्थे के समान लाल स्याही मायल होजाये तो उतारलें। कच्चा न रहे। यदि कच्चा मालूम हो तो फिर तैयार करें।

मात्रा—शीतकाल में मात्रा १ रत्ती, निर्वीज मुन्नकामें रख कर दें, ग्रीष्म काल में एक रत्ती से कम लें। लाल मिर्च, गुड, तेल, दही, दूध से परहेज करें। ईश्वर ने चाहा तो उपदंश कोढ की दशा को भी पहुंच गया हो तो दूर हो जायगा।

तृतीय प्रयोग

रीठे के छिलके पाव भर के मध्यमें दो डलियां नीलाथोथा की (तूतिया) तोला २ भर की रखकर कूजे को सम्पुट करके तीन सेर उपलों की अग्नि दें। फिर निकाल कर पीसलें। मात्रा १ रत्ती उपदंश वाले को मक्खन में लपेट कर खिलायें। प्यास लगने पर घी पीने को दें। १२ घण्टे तक पानी कदापि न दें। ईश्वर ने चाहा तो एक ही दिनमें सब क्षत शुष्क हो जायेंगे और रोगी ठीक हो जायगा।

चतुर्थ प्रयोग

रीठे का छिलका पावभर, नीलाथोथा ५ तोला। दोनों को सूक्ष्म पीसकर तांबे की कढाई में डालकर चूल्हे पर चढायें और नीचे अग्नि जलायें जब जलकर राख हो जाये तो ठंडा करके सूक्ष्म पीसलें और उसमें गोंद का पानी मिलाकर दो २ रत्ती की गोलियां बनालें और इन पर एक तह खांड़ की चढाकर रखें। मात्रा—१ गोली ताजा पानी के साथ दें। बडे बडे क्षत (घाव) भरकर त्वचा शुद्ध हो जाती है।

व्रण (फोड़ा)

जब तक फोडे में पीप पडनी आरम्भ न हुई हो तब तक निम्न लिखित मरहम लगाने से शोथ को तुरंत बिठा देता है।

मरहम—यह बडा अद्भुत मरहम है। रीठे का छिलका लाल शक्कर, साबुन देशी। रीठे के छिलके को सूक्ष्म पीसकर शक्कर मिश्रित करें, तत्पश्चात् साबुन मिलाकर जल द्वारा मरहम बनालें और कपडे पर लगा कर प्रातः सायं लगाया करें। वास्तव में एक अद्भुत वस्तु है और मेरा परीक्षित है। एक कदायनी हकीम ने इस मरहम को फारसी कवितामें लिखा है और उनकी इस मरहम पर बडी श्रद्धा है।

पुरुषों के विशेष रोग

हमें अत्यन्त शोक से कहना पड़ता है कि आजकल सहस्रों मनुष्य प्रमेह, स्वप्नदोष, कमजोरी के रोगी सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सम्भव है कि तीन चार प्रतिशत ही ऐसे सौभाग्यशाली

व्यक्ति होंगे, जिन्होंने ऐसे रोगों से छुटकारा पाया हुआ हो। अधिकतर मनुष्य इन रोगों में ग्रसित दिखाई देते हैं। जहां भाग्य हीन भारत ताऊन मलेरिया आदि रोगों का केन्द्र बना हुआ है, वहां वंश विच्छेद तथा आयु को नष्ट करने वाला प्रमेह सब से अधिक फैल रहा है। इस रोग का रोगी ताऊन जैसे भयंकर रोग के समान तुरन्त ही तो नहीं मरता परन्तु उसके जीवन का स्थिर रहना बहुत कठिन हो जाता है। युवावस्था का आनन्द वह भोग नहीं सकता। यद्यपि वह देखने में तो युवक विदित होता है, लेकिन उसके अन्दर यौवनता के चिन्ह प्रतीत नहीं होते।

उसका साहस मन्द, उसकी इच्छायें निर्बल तथा स्मृति भ्रंश के साथ २ पाचन शक्ति का ह्रास भी होता रहता है। अन्त में अल्पहारी बन जाता है, मुख की कान्ति नष्ट होजाती है तनिक चलने में श्वांस चढ जाता है। आरम्भ में मूत्र के पूर्व या मध्य में या पश्चात में श्वेत वर्ण की धात गिरती है लेकिन अन्त में चलते २ धोती की रगड से अश्वारोहण से धातु पतन होना आरम्भ हो जाता है। वह अमूल्य रत्न जो शुद्ध रक्त से एक मास में बना था जिसको सुरक्षित रखना अत्यन्त आवश्यक था। जिसके कारण शरीर के अवयव बलिष्ट थे, जिसके होने से जवानी की तरंगें मन में उठती थीं, उसका व्यर्थ ही अधःपतन हो जाता है और रक्त बनना बन्द हो जाता है, निर्बलता बढती जाती है क्षुधा मारी हो जाती है और मुख की कान्ति निस्तेज हो जाती है एवं अन्त में एक दिन केवल हड्डियों का ढांचा अवशेष रह जाता है। आमाशय कुछ कार्य नहीं करता। अन्त में लाचार

होकर अपने आप को अशक्त जानकर जीवनसे निराश हो जाता है। इस दशा में पहुंचने के बाद कितने ही युवक तो आत्महत्या कर बैठते हैं। अतः आवश्यकता है कि इस रोग की चिकित्सा का शीघ्र ही प्रबन्ध किया जावे तो उत्तम है। प्रमेह नाशक औषधि का ईश्वर की कृपा से हमें एक योगी द्वारा एक ऐसा चमत्कारी प्रयोग प्राप्त हुआ है, जो प्रमेह और पुराने प्रमेह को जड से उखाड कर फैंक देता है। अव्वल तो पहले दिन आराम हो जाता है परन्तु ३ दिन में स्वप्न दोष आदि रोग ऐसे भाग जाते हैं जैसे गधे के सिर से सींग। यह नुसखा रीठे का नहीं है, यह अन्यान्य औषधियों से तैयार किया हुआ है और जिसका मूल्य भी अल्प है। जिसके एक सप्ताह सेवन कर लेने से उपरोक्त कोई भी रोग नहीं रह सकता। कीमत ७ खुराक २) है, जो अत्याल्प है। आवश्यकता होने पर दवा मंगालें। नीचे एक रीठे का नुसखा लिखता हूं जो प्रमेह के लिये हितकर है और इसी प्रकार स्त्री रोगों में भी गुणदायक है। मगज रीठा जरदी दूर किया हुआ शुद्ध, खांड के साथ ६ माशे मात्रा में लेकर आठ दिन तक सेवन करें, ऊपर से थोडा सा पानी पीवें।

मैंने अपने तीन परीक्षित प्रयोग अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अनुभूत योग चिन्तामणि' में प्रकाशित कर दिये हैं। जो एक दूसरे से चढ़ बढकर हैं।

पथ्य—गरम पदार्थ, गुड, शक्कर, तुरसी (खट्टी) मांस मसालेदार तरकारियां आदि।

रोगी का आहार-शीघ्र पचने वाली यथा फिरनी, खीर, दाल उड़द, गेहूं की रोटी।

क्लैब्यता

यह बडा भयंकर रोग है। यदि इस रोग पर विस्तार पूर्वक विवेचना पूर्ण लेख लिखा जाय तो एक बडी पुस्तक तैयार हो सकती है। किन्तु यहां स्थानाभाव से संक्षेप में ही लिखा जायगा। क्लैब्यता (नामर्दी) हस्त क्रिया से उत्पन्न होती हैं। हस्त क्रिया से प्रमेह और प्रमेह से नपुन्सकता हो जाती है। जैसा कि हम गत पृष्टोंमें लिख चुके हैं। बहु मैथुनसे भी नपुन्सकता हो जाती है। इस विषय को विस्तार पूर्वक और अनुभूत प्रयोगों का संग्रह देखना अभीष्ट हो तो हमारी प्रसिद्ध पुस्तक 'अनुभूत योग चिन्तामणि' मंगाकर अवश्य पढें। क्लैब्यता (नपुन्सकता) की चिकित्सा बडी कठिन है किन्तु 'अनुभूत योग चिन्तामणि' पढ लेने के पश्चात इसकी चिकित्सा अत्यंत सरल हो जावेगी। इसकी रीठे से बनने वाली अक्सीर औषधि का प्रयोग निम्नलिखित है।

यथा—यदि रगों में बाहर की कोई खराबी न हो या कोई तिला आदि से दूर करली जाय तो बस खाने की दवा आंतरिक दोषों को निवारण करने के लिये पर्याप्त है। इसका प्रयोग रसों के वर्णन में सिंगरफ मोमियां शीर्षक लेख में देखें।

नोट—यह नियम है जब तक प्रमेह दूर न हो जावे, उस समय तक कोई बाजीकरण औषधि कुछ भी प्रभाव नहीं कर

सकती। बल्कि मारनेवाले विष तुल्य है। अतः सबसे प्रथम प्रमेह का नाश करना चाहिये। फिर नपुन्सकता की चिकित्सा। निम्न लिखित वटिका भी अति बाजीकरण है।

बाजीकरण वटिका

रीठे का छिलका, केसर, कस्तूरी, जातिफल, छुहारा समभाग लेकर सूक्ष्म पीसलें और चने के समान गोलियां बनालें। मात्रा १ गोली प्रातः सायं।

स्तम्भन

स्तम्भन शब्द में भी ऐसा जादू है कि प्रत्येक मनुष्य को चन्द मिनट के लिये अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। किंतु खेद है कि हमको इस लालसा से बडी हानि होती है। क्योंकि स्तम्भनवटियों में प्रायः मादक वस्तुओं का सम्मिश्रण होता है। जो थोडे समय अपना असर दिखाकर पहिली शक्ति को भी नष्ट कर देता है और अति हानिकारक होता है, जिसका सेवन कदापि नहीं करना चाहिये। हां! ऐसी भी विधियां हैं जिनसे बिना औषधि के स्तम्भन पैदा हो सकता है। एक विधि हमारे पास भी है जो दस गुणा स्तम्भन-शक्ति को बढा देती है, यदि विवरण पूछना हो तो दो रुपये मनीआर्डर द्वारा भेज कर रसायन फार्मेसी पो० बो० १२५ देहली से मंगालें।

स्तम्भन वटी

निम्न लिखित प्रयोग मादक वस्तुओं से रहित है—

रीठे का छिलका समभाग लेकर सूक्ष्म पीसलें और पानी

या मधु या छुहारे के गोंद (जरा बन्द छुहारा) से चने के समान गोलियां बनालें और कुछ गोलियां इससे अधिक मात्रा की बनालें समागम से एक घण्टा पूर्व एक गोली खालें और एक छोटी गोली मूत्रेन्द्रिय के छिद्र में रखकर सम्भोग करें और चमत्कार देखें।

दूसरा योग

रीठे का छिलका सूक्ष्म पीसकर छानलें, फिर घी कुवार के रस से गूंधकर एक गोला सा बनालें, इस गोले को उडद के गुन्धे हुए आटे में लपेट कर रखदें, फिर दो तीन सेर उपलों की अग्नि जलावें। जब उपले जलकर धुआं न रहे तो गोले को आग के अंगारों पर भूनें। जब आटे का रंग सुरख हो जावे तब शीतल करके तोडकर भीतर से दवा निकाल लें, जो खुश्क होगई होगी सूक्ष्म पीसकर शीशी में रखें।

लाभ तथा गुण—यह दवा एक माशा की मात्रा में रात को सोते समय सेवन करें ऊपर से दूध पान करें तो स्तम्भन और काम शक्ति बढ जायगी और यह कब्ज को भी दूर करती है। स्तम्भन की यह अनुपम औषधि है।

विष नाशक अगद

रीठे में सब से अधिक गुण यह है कि समस्त विषों को वमन द्वारा निकाल देता है। अतः सर्प के लिये तो यह प्रयोग सर्वोत्तम अगद माना गया है। सर्प दंशित को रीठा कई विधियों से सेवन कराया जाता है किन्तु यहां वही प्रयोग लिखे जाते हैं जो अनुभूत हैं।

सर्प विष नाशक अगद।

सर्प दंश पर यह अगद रामबाणके समान काम करता है। बीस इक्कीस वर्ष में कई सौ मनुष्यों पर इसका अनुभव किया। कुछ थोडे से मनुष्यों को छोडकर बाकी सबको पूर्ण लाभ हुआ यदि सांप के काटे हुए मनुष्य के जबाडे बन्द हों ता रीठे का चूर्ण उसके जबाडे पर मल दिया जावे तो तुरंत ही खुल जाते हैं। यह आमाशय में पहुँचते हा रोगी को होश में ले आता है। यदि प्राण बाकी हों ता रोगी बच जाता है। इसकी परीक्षा यह है कि तालू और मस्तक के मध्य में पछना (उस्तरा) लगाकर देखो, यदि रक्त न निकले तो समझो कि सर्प विष का रोगी मर चुका है, यदि रक्त की धारा निकले या बूंद टपके तो रीठा नौ माशा घोटकर पिलावें, फिर दो घण्टेके बाद पिलाव। यदि इसके साथ निम्न लिखित लेप किया जाय तो गुणकारी सिद्ध होता है। यह लेप मोलवी हकीम हिदायतअली साहब का बतलाया हुवा है। वह लेप भी आश्चर्यजनक चीज है। यह समस्त सप विष को जख्मों के मार्ग से निकाल देता है।

लेप—रीठे का छिलका १ तोला, तूतिया ३ माशे, संखिया ३ माशे, महीन पीसकर आक के दूधमें २ घंटा रगडे और शुष्क करदें, दूसरे दिन पुनः ३ घंटे अर्क दूध से पीसकर सुखादें, इसी प्रकार ३ बार करें। फिर शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यक्ता होने पर दंशित स्थान पर पछना (उस्तरा) लगाकर लेप करें।

काढा—रीठे का छिलका १ तोला, इससिट बूटी २ तोला,

पानी में उबाल कर पिलावें, ईश्वर ने चाहा तो वमन होकर समस्त विष निकल जायगा। दो घंटे के बाद फिर सेवन करावें।

रीठे के सत का प्रयोग।

बहुत से वैद्यों को नुसखे छुपाये रखने का ख्याल रहता है किन्तु हम अपने अनुभूत प्रयोगों को तथा परीक्षित नुसखों को छुपाना पाप समझते हैं अतः उपरोक्त नुसखा आपके समक्ष है। अब एक और नुसखा लिखता हूं जो सर्प विष के लिये हितकर है। पोस्त रीठा १ सेर, पानी ३ सेर। पहिले रीठे के छिलके को महीन पीसकर पानीमें डालकर बिलोना आरम्भ करें और जितनी झाग आती जावे उसको चीनीके प्लेटमें उतारते जावें। जब झाग आने बन्द हो जावें तो उस झाग को धूप में सुखा कर रखलें, बस यही सत रीठा है। खुराक केवल २ रत्ती। सांप के काटे की गुणकारी औषधि है।

बूये-मस्त

किसी २ पुरुष के शरीर में मस्ती की गन्ध (बूये मस्त) उत्पन्न हो जाती है और उस गन्ध के उत्पन्न होते ही सांपन उसे काटती है यही कारण है कि किसी २ पुरुष को प्रति छः मास के पश्चात् अथवा प्रति वर्ष सांपन काटती है। प्रायः ऐसे मनुष्यों की मृत्यु सांपन के काटने से ही हुआ करती है। ऐसे पुरुषों की रक्षा का यही सर्वोत्तम उपाय हैं कि किसी प्रकार उनके शरीर में मस्ती की गन्ध उत्पन्न न होने दी जाय, अतः गन्ध (बूये-मस्त) को नष्ट करने के लिये ऐसे पुरुषको-जिसे शीघ्र २ सर्प काटता हो

प्रति छटे मास एक माशा सफूफ (चूर्ण) रीठा सेवन करायें। इसके सेवन से बूये मस्त (मस्ती की गन्ध) दूर हो जायगी। फिर सांपन कदापि न काटेगी।

सर्प दंशित पशु की चिकित्सा

यदि किसी पशु को सर्प काट खाये तो रीठे का चूर्ण आध पाव पानी में घोटकर नाल द्वारा पिलावें। ईश्वरने चाहा तो चंद खुराक पिलाने से विष बिलकुल उतर जायगा।

कथा:—एक मनुष्य को ऐसे विषधारी सर्प ने काटा कि उसका शरीर नितान्त फट गया। उसको १८ दिन तक रीठे का चूर्ण १ माशा की मात्रा में प्रातः सायं दिया गया। परिणाम स्वरूप घाव भरकर बदन बिलकुल शुद्ध और आरोग्य हो गया। अतः जंगल में रहने वाले मनुष्यों को रीठे का चूर्ण अपनी जेब में रखना चाहिये।

सर्प को घर से भगा देना।

यदि किसी घर में सप का आना जाना प्रतीत हो तो दस बारह तोला चूर्ण रीठा पानीमें घोलकर घर में छिडकदें, या बिल में डालदें, तो सर्प उस घर को बिलकुल छोड देता है। और बिच्छु भी इससे भाग जाते हैं।

नोट—कुछ मनुष्यों को इसके सेवन से वमन और दस्त शुरु हो जाते हैं और किसी को बिना कष्ट ही आराम हो जाता है। इसका कारण यह है, कि प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति अलग २ होती है।

बिच्छू का विष दूर करना ।

बिच्छु काटे पर दो माशा चूर्ण रीठा या एक रत्ती सत रीठा पानी में खिलायें, और कुछ चूर्ण रीठा हुलास की तरह सुंघावें और थोडा सा चूर्ण रीठा पानी या सिरकेमें पीसकर लेप करें। यदि इसी तरह लेप करते रहें और लेपसे पूर्व पछने (उस्तरे के साधारण घाव) लगादें, तो अवश्य आराम होजाता है। भिड बिच्छु, ततैया, मक्खी आदि समस्त विषैले जन्तुओं के काटने पर रीठे का छिलका सिरके में अति महीन पीसकर मरहम सा बनाया हुआ दंशित स्थान पर लेप करें। सुख जाने के पश्चात् फिर लेप करें। ईश्वर ने चाहा तो विष उतर जायगा।

बिच्छुओं से सुरक्षित रहना

यदि रीठे का छिलका पानी में पीसकर घर में छिडक दें, तो बिच्छू इसकी गंध से घर से भाग जाता है।

अफीम का अगद ।

अफीम खाकर जो मूर्छित हो गया हो तो उसको रीठा उबाल कर (जब झाग आने लगें) तो पिलावें, वमन होकर विष दूर हो जायगा।

अद्भुत चमत्कारी गुण ।

जो मनुष्य रोटी खाने से पूर्व २ रत्ती से चार रत्ती तक रीठा का सेवन करते हैं, उनको किसी प्रकार का विष नहीं चढता

विविध प्रकार की व्याधियों के नुखसे।

डब्बा रोग।

यह रोग बच्चों को हो जाता है। पसली जल्दी २ चलती चलती है। मल नहीं आता, ज्वर हो जाता है। इस रोग में रीठे के छिलके को बारीक पीसकर शहदसे १ रत्ती प्रमाण की गोलियां बनावें, और बच्चे को उसकी मां के दूध में घिसकर पिलावें। इसी प्रकार फिर दें। अत्यन्त हितकर है।

पांडू रोग वा प्लीहा

रीठे का गूदा जर्दी व कालापन दूर किया हुआ बारीक पीसकर दो माशे के लगभग सिकंजवीन सिरका के साथ देते रहें ईश्वर ने चाहा तो दोनों रोग दूर होंगे।

रजोदर्शन

रीठे के छिलके को पानी में घिसकर योनि में रखने से रजोदर्शन हो जाता है।

रज प्रवर्तनी वटिका

रीठे के छिलके पीसकर रत्ती २ की गोलियां बनालें, और दोनों समय दो से चार गोलियों तक गर्म पानी से दिया करें, मासिक धर्म खुलकर हुआ करेगा।

सूजन और फोड़ा आदि

रीठे के छिलके को पीसकर कपड छान करके जख्म, चोट फोडा आदि के सूजन पर मरहम के समान लगाते रहें, तो शोथ बहुत शीघ्र उतर जायगी।

आक (मदार) के दूध में मिलाकर दो टिकिया बनालें और इन दोनों के मध्य में नीलाथोथा की एक डली रखकर टिकियों को आपस में जोडदें और दो प्यालों में रखकर स्रावसम्पुट करके कपरौटी करके सुखालें, और हवा से बचाकर चार सेर कंडों की आग दें। सफेद भस्म तैयार होगी। दही में डालकर देखें, यदि जंगार न दे तो तैयार है, बरना फिर आक के दूध में खरल करके गर्म भूबल में भून लें।

गुण—पुराने उपदंश, मूत्रकृच्छ आदि को हितकर है। मात्रा आधे चावल से आधी रत्ती तक।

अकीक मारण विधि।

एक तोला उत्तम अकीक को रीठेके छिलकेमें रखकर स्राव सम्पुट करके १ मन उपलों की आग दें। भस्म तैयार होजायगी।

गुण—हृदय को शक्ति देने वाला, बाजीकरण है। मात्रा १ रत्ती गाय के मक्खन में दें।

सिंगरफ भस्म अक्सीरी।

पाठकों को विदित हो कि यह नुसखा एक संयासी महाराज का बतलाया हुआ है, जो कि सचमुच कीमियागर थे। इस नुसखे को मेरे कृपालु मित्र हकीम कासिमअली साहिब ने इन शब्दों में प्रशंसा की है कि विद्यार्थी काल में हमारे पास एक संयासी साहिब विचरते हुए कहीं से आ ठहरे। इसी ग्राम में से एक श्वांस का रोगी उनकी सेवा में औषधि के लिए प्रार्थी हुआ संयासी महोदय ने अपनी कृपा अनुग्रह से रोगी को एक रत्ती भर दवाई दे दी। बस थोडी सी देरमें वमन हुई और असंख्यात

कफ के जाले निकले, फिर उसे कह दिया कि घी, दूध खूब खाओ ईश्वर की शानके बलिहारी जाइये, वह कृश्य शरीर और कमजोर रोगी तीन दिन में ही लाल सुर्ख हो गया। काम शक्ति बढ गई और उसकी काया पलट हो गई। संयासी जी से मैंने नुसखे के लिये प्रार्थना की, भला वह इतनी जल्दी बताने वाली आसामी कहां? उनसे बडी कठिनता से इस शर्त पर कि यदि तुम इसे केवल रोगियों के लिए बांटना चाहो तो दे सकता हूं, अक्सीरी क्रिया कदापि न बतलाऊंगा। हमने कहा कि इससे श्वांस रोग का दूर हो जाना और काया पलट होना क्या अक्सीर से कम है। अन्त में संयासीजी ने वह नुसखा इस तरह बताना आरम्भ कर दिया, जिससे मालूम होता था कि वह इस नुसखे को पूरी तरह से सिखाना चाहते हैं।

पवित्र नुसखे की तरकीब देखिये

रीठे का छिलका दो सेर, किष्टा (सुनारों वाला) दो सेर, दोनों को कूटकर (अधिक बारीक करने की आवश्यकता नहीं) आपस में मिला दिया और एक लोहे की कढाई में आधा चूर्ण नीचे बिछाकर उस पर पांच तोले की सिंगरफ की डली रखकर बाकी आधा चूर्ण ऊपर बिछा दिया और फिर समस्त दवाई के ऊपर एक बडा लोहे का पात्र औंधा मारकर ढांप दिया और अपने पास से चारों तरफ जिलबन्द लगाकर कढाई पानी से भर दी और लगातार आठ पहर तक आग दी गई, फिर सर्द करके सिंगरफ कायमुलनार निकाल कर फरमाया कि बस यह दवा इसी प्रकार से बना लिया करो। हमने जिलबन्द पूछा तो

वह भी ठीक २ बता दिया, इस अक्सीरी अमल से चूंकि मना कर दिया था, अतः हम पूंछ न सके, तत्पश्चात स्वयंमेव परीक्षा करना चाहो तो पहले जो जिलबन्द बनाया था, उस पर हमने पूरा २ परिश्रम तथा उद्योग नहीं किया बल्कि शीघ्र तैयार करने को उत्सुक हो गये। नियम के अनुसार आग देनी आरम्भ की चार पहर आग देने के पश्चात जिलबन्द टूट गया और परिश्रम निष्फल गया। यह इस नुसखे की हकीकत है। यदि आपको ऐसा जिलबन्द लगाना आता हो जो कि आठ पहर न टूटे, तो नुसखा तैयार करलें। चाहे इससे आप रसायनिक क्रिया करें, चाहे औषधि रूप में व्यवहार लावें यह आपकी इच्छा है। हां जो नुसखा जिलबन्द का हमारे पास है, यदि उसे पूरी सावधानी से बनाया जाये तो आठ पहर तक कदापि नहीं टूटता। यदि कोई महाशय हम से सीखना चाहें तो सीख सकते हैं। जिलबन्द के नुसखे के लिये संसार भटकता है लेकिन नहीं मिलता। अगर किसी के बहुत उद्योग तथा अन्वेषण करने के बाद जानने वाला मिल भी गया तो वह किसी तरह और किसी बदले पर भी बताने के लिये तैयार नहीं होता। कहां हैं वह साहिब जिन्हें जिलबन्द करने की तलाश है ? वह आयें और हम से जिलबन्द सीखलें। हम न कोई फीस मांगते हैं और ना ही कोई भेंट। केवल हमारी बनाई हुई पुस्तकें या औषधियों का २५) रु० का वी० पी० मंगाने वाले को मुफ्त बतलाते हैं। प्रयोग गुप्त रखने का इकरारनामा लिखकर देना होगा। मैं अपने मुंह मियांमिट्ठू बनना नहीं चाहता बल्कि ईश्वर का धन्यवाद करता हूं जिसने

मुझ से कृपणता को कोसों दूर रखा है। आपको मेरे इस दावे की दलील मेरी रचना 'अनुभूत योग चिन्तामणी' से मिल सकती है, जिसमें बहुत से प्रयोग फीस देकर प्राप्त किये हुये हैं, जो सर्व साधारण के लिये बिना संकोच लिख दिये हैं। विशेषकर खिजाब जर्मनी फीस १००) रुपये एक पाउडर वाला, दो शीशी पाउडर जापानी खिजाब, एक शीशी अर्क वाला फीस २५) रुपया वाला इत्यादि सहस्रों नुसखे लिखे हैं। कीमत केवल ४।)।

मोमिया सिंगरफ भस्म बनाना

यह भस्म बडी ही उत्तेजक, कामवर्द्धक है, दूध, घृत को पाचन करती और मुख की आकृति को सुर्ख बना देती है। दस बारह दिन के सेवन से गया गुजरा नपुन्सक भी ईश्वर की कृपा से मर्द बन जाता है। सारांश यह है कि यदि वाह्य दोष किसी उचित तिला आदि से दूर कर लिया जावे तो आन्तरिक दोष के लिये यही नुसखा काफी से भी अधिक हितकर है। तरकीब यह है कि नीला थोथा भस्म सफैद रंग वाली जो कि ऊपर लिखी जा चुकी है १ तोला, मदार का दूध दस तोला में डालकर एक सप्ताह रख छोडें। १ सप्ताह के पश्चात कपड़े से छानकर पास रखें और सिंगरफ रूमी एक तोला को किसी मिट्टी के पात्र में रखकर नरम आग पर रख और उस पर दूध का चोया देते रहें। जब समस्त सिंगरफ नरम होकर मोम जैसी हो जावे तो उतार कर शीतल करलें। मात्रा १ चावल से २ चावल तक, मक्खन या मलाई में खिलायें, खट्टी, बादी की चीजों तथा मैथुन से बचें।

प्राकृतिक साबुन

कागडा और अन्य पहाडी स्थानों पर रीठे के वृक्ष असंख्यात होते हैं और करोडों मन रीठे यों ही नष्ट हो जाते हैं। इनको बेकार वस्तु समझ कर कोई पूछता तक नहीं, बाजार का वर्तमान मूल्य प्रायः रेल किराया के कारण लगाया जाता है। यदि देखा जावे तो पहाडी लोग दो पैसा बोरी के हिसाब से व्यापारियों को दिया करते हैं। कुदरत ने रीठेमें साबुन की तरह साफ करने के समस्त गुण भर दिये हैं। मैंने अपने लगातार अनुसंधानों में इस बात की कोशिश की है कि हिंदुस्तान की इस व्यर्थ वस्तु को मैं अधिक से अधिक किस तरह उपयोगी बना सकता हूं। चुनाचे मैं थोडी सी महनत के पश्चात रीठों को साबुन के रूप में परिवर्तन करने में सफल हो गया। इसलिये साबुन तैयार करने का सरल उपाय नीचे लिखा जाता है:—

उपाय—चूना अनबुझा १ भाग, जल १ भाग। दोनों को एक मिट्टी के बर्तन या सीमेंट के कुण्ड में भिगो दें और निथरा हुआ पानी लेलें। इस पानी को सीमेंट के कुण्ड में डालकर रीठे को खूब गून्दें। इस बात को स्मर्ण रखें कि कवाम नर्म न होने पावे बल्कि कुम्हार की मिट्टी की तरह सख्त रहे। यदि सुगन्ध डालनी हो तो मन भावनी डालें, बस अब साबुन तैयार है। इस कुदरती साबुन का संसार के उत्तमोत्तम साबुनों से मुकाबला करें और देखें कि यह साबुन जहां स्नान के लिये उत्तम है, वहां रेशमी ऊनी तथा सूती कपड़ों को भी अच्छा साफ करता है। मेरी इच्छा थी कि इस साबुन को पेटेन्ट कराकर उसकी तिजारत करूं लेकिन अब मैं इस रहस्य को आपके सुपुर्द करता हूं, अब आप लाभ उठावें।

समाप्तम्

अनुभूत योग प्रकाश

आज से १५ वर्ष पूर्व जिस पुस्तक को प्रकाशित करने का आयोजन प्रकाशित किया गया था वह पुस्तक अब छपकर तैयार होगई है। पुस्तक परिमित संख्या में छपी है अतः आप आज ही पत्र भेजकर मंगालें वरना फिर इस अनमोल ग्रन्थ का शीघ्र प्राप्त होना असम्भव हो जायगा (२) इस पुस्तक के योगों के विषय में केवल इतना बतला देना काफी होगा कि गत १५ वर्ष के सतत उद्योग से बडे २ साधु महात्मा फकीरों, भीलों से लेकर राजा और रईसों तथा ख्याति प्रसिद्ध विद्वान वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों के उन अनुभूत चमत्कारी योगों को इस पुस्तक के पृष्ठों पर अंकित कर दिया है,—जिनको जमाने की हवा भी न लगी थी इसमें सबसे बडी वह रिसर्च आपको मिलेगी जिसे आजतक आपने सुना भी न होगा, अर्थात् समुद्रीय द्रव्यों यथा मुक्ता-शुक्ति प्रवाल, शंख, कपर्दिका आदि का तेल बनाना। इन तेलों की तुलना में इन द्रव्यों की भस्में बहुत ही तुच्छ लाभ पहुँचाती हैं। इन तेलों से अनेक कष्टसाध्य और असाध्य कहे जाने वाले रोग शर्तिया और शीघ्र मिट जाते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि इन तेलों से उडने वाले सभी द्रव्य यथा पारद, हिंगलु (शिंगरफ) आदि स्थाई हो जाते हैं। इसी प्रकार कैन्सर (Cancer) जैसे भयंकर रोगका सफल अनुभूत योग इस पुस्तक के सिवाय और कहीं नही मिलेगा तथा मधुमेह बवासीर, नपुन्सकता, दमा, हिस्टीरिया आदिके जादूके समान चमत्कारी अनुभूत योग जिनसे ३ से ७ दिन में कैसा ही रोग क्यों न हो शर्तिया दूर किया जा सकता है। सारांश इसमें कोई ऐसा रोग नहीं छोडा जिसका अनुभूत योग इस पुस्तक में न हो। मू०६।) डा० ख० ॥)

पता—रसायन फार्मेसी पो०, बा०, नं० १२५ देहली।